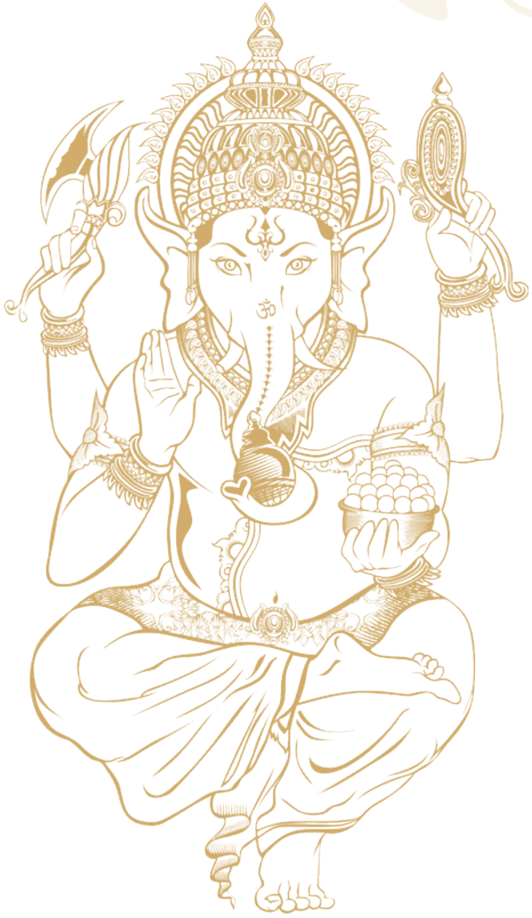

Mr.atharv vijay wayal

26 Oct 2018

07:35 PM

Nerul

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121201801**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**26/10/2018**
दिवस	शुक्रवार
जन्म समय	**19:35:00 कला**
इष्ट	32:27:32 घटी
स्थान	**Nerul**
देश	India

अक्षांश	19:02:00 उत्तर
रेखांश	73:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:37:56 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	18:57:04 कला
वेलान्तर	00:16:03 कला
साम्पातिक वेल	21:16:40 कला
सूर्योदय	06:35:59 कला
सूर्यास्त	18:07:49 कला
दिनमान	11:31:50 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्याचे अंश	08:59:07 तुला
लग्नाचे अंश	04:25:56 वृषभ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृषभ – शुक्र
राशि–स्वामी	**वृषभ – शुक्र**
नक्षत्र–चरण	**कृतिका – 2**
नक्षत्र स्वामी	रवि
योग	व्यतिपात
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	इ–ईश्वर
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

पंचांग

आजोबांचें नांव ____________ :
बडीलांचे नांव ____________ :
आईचें नांव ____________ :
जाति ____________ :
गोत्र ____________ :

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	कार्तिक	4
पंजाबी	संवत : 2075	कार्तिक	10
बंगाली	सन् : 1425	कार्तिक	9
तमिल	संवत : 2075	अरपिसी	9
केरल	कोल्लम : 1194	थुलम	9
नेपाली	संवत : 2075	कार्तिक	10
चैत्रादी	संवत : 2075	कार्तिक	कृष्ण 2
कार्तिकादी	संवत : 2075	आश्विन	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि	: 2
तिथि समाप्ति वेल	: 20:09:41
जन्म तिथि	: 2
सूर्योदय समयी नक्षत्र	: भरणी
नक्षत्र समाप्ति वेल	: 09:02:55 कला
जन्म योग	: कृतिका
सूर्योदय समयी योग	: व्यतिपात
योग समाप्ति वेल	: 27:43:03 कला
जन्म योग	: व्यतिपात
सूर्योदय समयी करण	: तैतिल
करण समाप्ति वेल	: 08:49:24 कला
जन्म करण	: गर
भयात	: 26:20:13
भभोग	: 58:13:05
भोग्य दशा वेल	: सूर्य 3 वर्ष 3 मा 16 दि

घात चक्र

मास	: मार्गशीर्ष
तिथि	: 5-10-15
दिवस	: शनिवार
नक्षत्र	: हस्त
योग	: शुक्ल
करण	: शकुनि
प्रहर	: 4
वर्ग	: सर्प
लग्न	: वृषभ
रवि	: वृश्चिक
चन्द्र	: कन्या
मंगळ	: धनु
बुध	: कन्या
गुरु	: मकर
शुक्र	: मकर
शनि	: तुला
राहु	: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

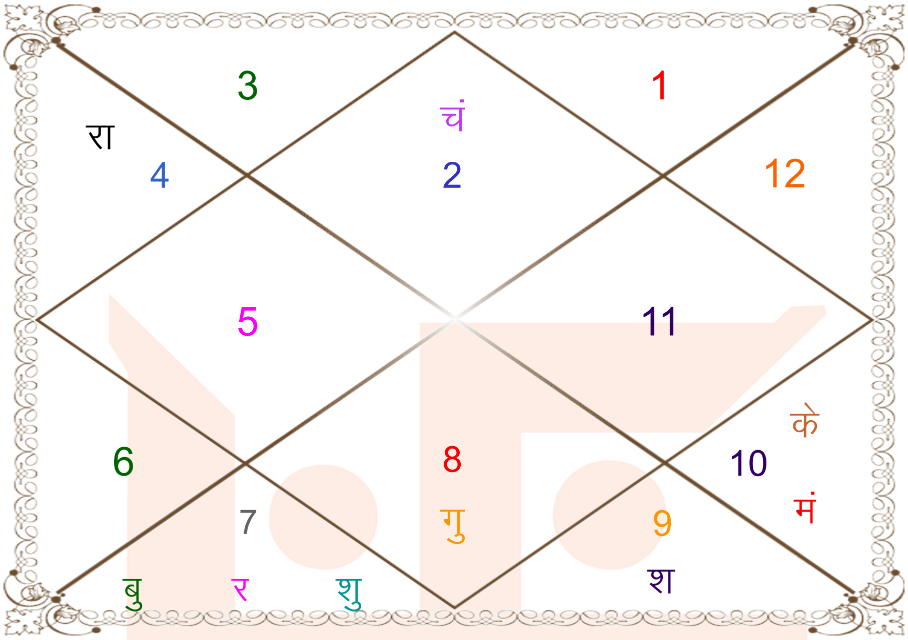

चन्द्र कुंडली

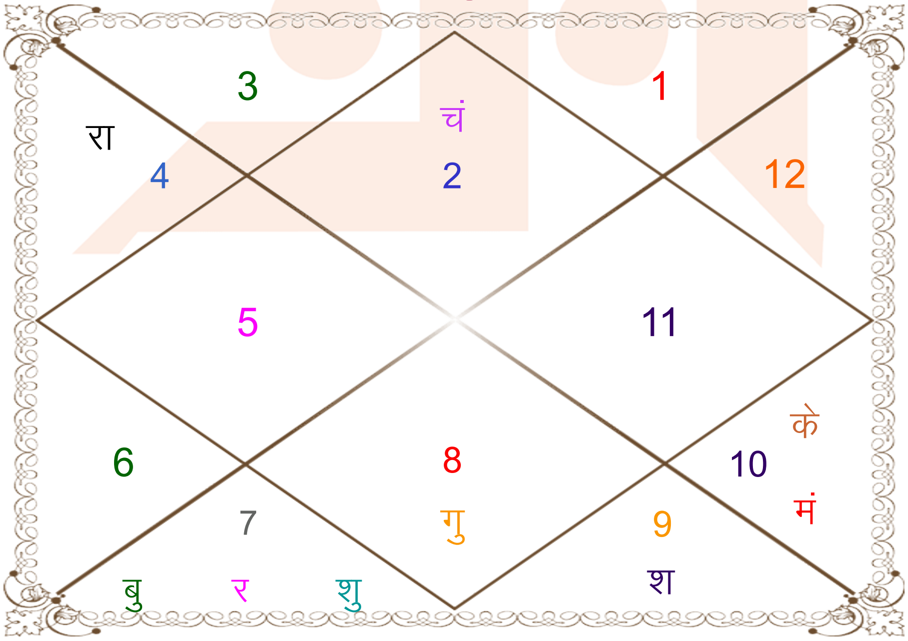

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

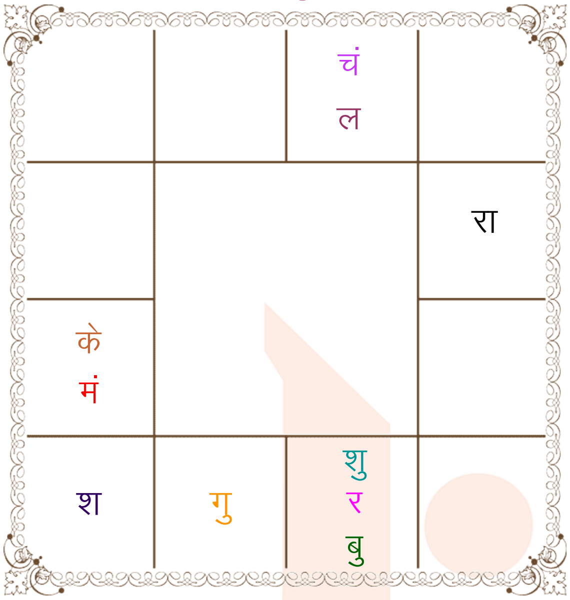

लग्न कुंडली

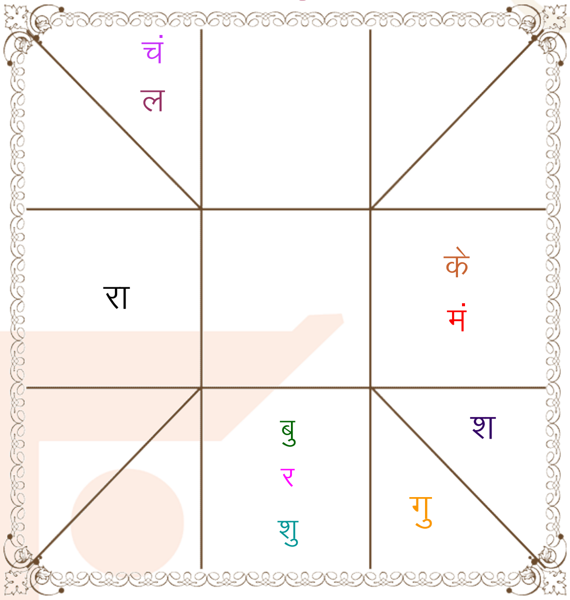

विंशोत्तरी
रवि 3वर्ष 3मा 16दि

रवि

26/10/2018

12/02/2136

रवि	11/02/2022
चन्द्र	11/02/2032
मंगळ	11/02/2039
राहु	10/02/2057
गुरु	10/02/2073
शनि	11/02/2092
बुध	11/02/2109
केतु	12/02/2116
शुक्र	12/02/2136

योगिनी
उल्का 3वर्ष 3मा 16दि

सिद्धा

11/02/2022

10/02/2029

सिद्धा	23/06/2023
संकटा	11/01/2025
मंगळा	23/03/2025
पिंगला	12/08/2025
धान्या	13/03/2026
भ्रामरी	22/12/2026
भद्रिका	12/12/2027
उल्का	10/02/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	04:25:56	379:32:02	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	———
सूर्य			तुला	08:59:07	00:59:49	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	नीच राशि
चंद्र			वृष	02:40:42	13:44:08	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	उच्च राशि
मंगळ			मक	24:02:18	00:32:45	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगळ	मंगळ	उच्च राशि
बुध			तुला	29:56:12	01:20:13	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
गुरु			वृश्चि	03:05:24	00:12:43	विशाखा	4	16	मंगळ	गुरु	राहु	मित्र राशि
शुक्र	व	अ	तुला	08:59:51	00:36:44	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण
शनि			धनु	10:23:51	00:04:30	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	सम राशि
राहु	व		कर्क	06:50:54	00:10:38	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		मक	06:50:54	00:10:38	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		मेष	06:20:10	00:02:27	अश्विनी	2	1	मंगळ	केतु	राहु	———
नेप	व		कुंभ	19:49:03	00:00:56	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगळ	———
प्लूटो			धनु	24:48:08	00:00:45	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	———
दशम भाव			मक	22:35:31	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:06:55

लग्न–चलित

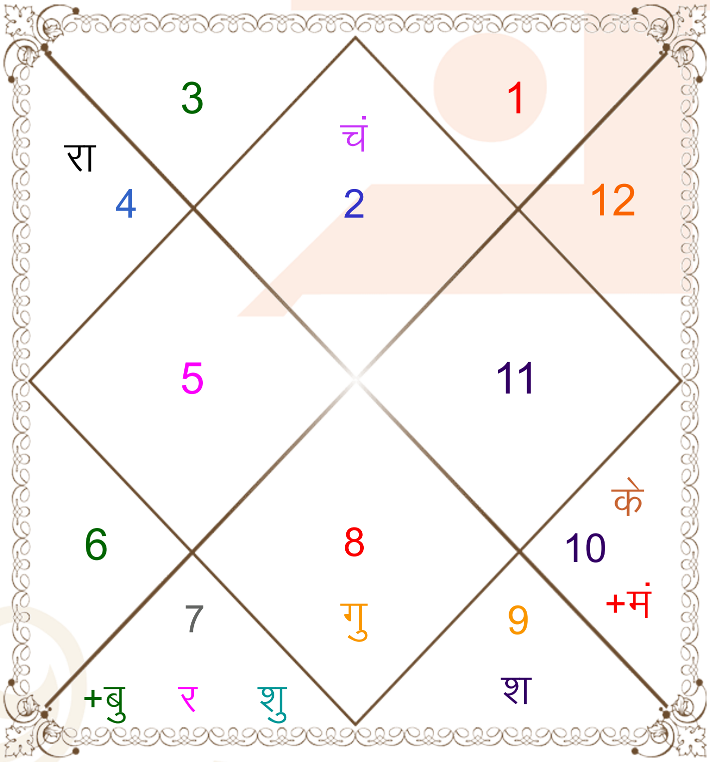

चन्द्र कुंडली

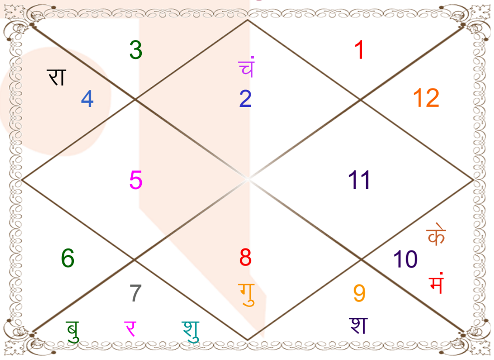

नवमांश कुंडली

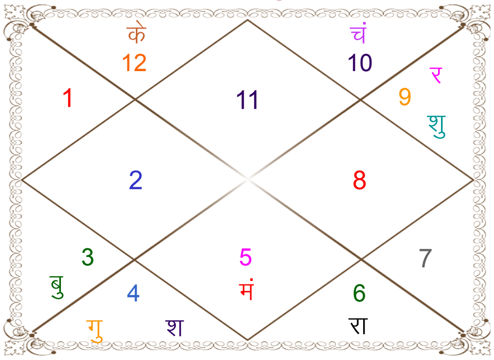

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	17:27:32	वृषभ	04:25:56
2	वृषभ	17:27:32	मिथुन	00:29:08
3	मिथुन	13:30:44	मिथुन	26:32:20
4	कर्क	09:33:56	कर्क	22:35:31
5	सिंह	09:33:56	सिंह	26:32:20
6	कन्या	13:30:44	तुला	00:29:08
7	तुला	17:27:32	वृश्चिक	04:25:56
8	वृश्चिक	17:27:32	धनु	00:29:08
9	धनु	13:30:44	धनु	26:32:20
10	मकर	09:33:56	मकर	22:35:31
11	कुम्भ	09:33:56	कुम्भ	26:32:20
12	मीन	13:30:44	मेष	00:29:08

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृषभ	04:25:56
2	मिथुन	01:10:42
3	मिथुन	26:03:22
4	कर्क	22:35:31
5	सिंह	23:29:08
6	कन्या	28:50:06
7	वृश्चिक	04:25:56
8	धनु	01:10:42
9	धनु	26:03:22
10	मकर	22:35:31
11	कुम्भ	23:29:08
12	मीन	28:50:06

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी
उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

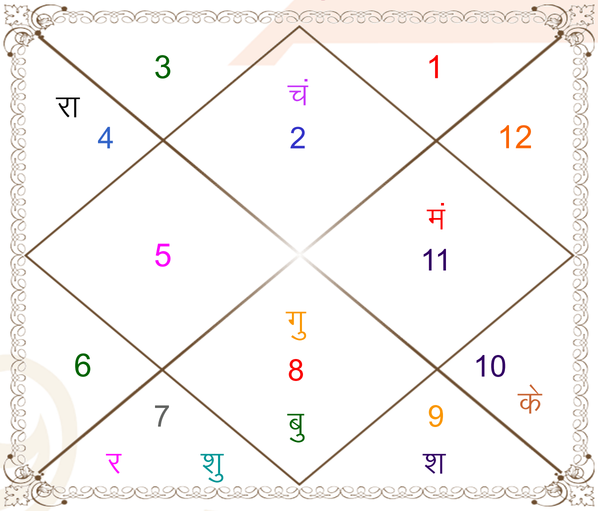

भाव कुंडली

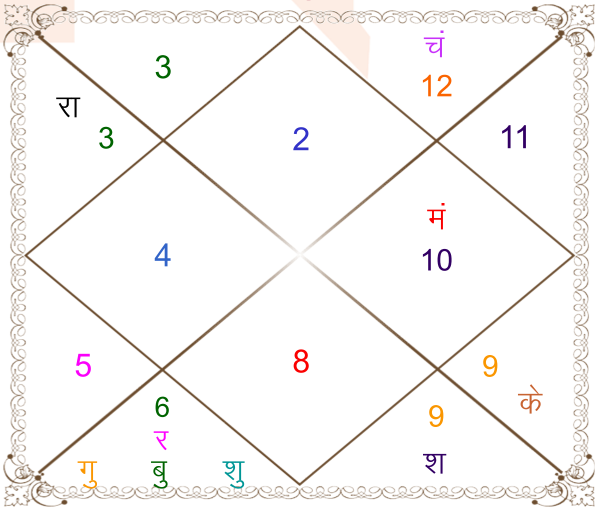

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.02	30 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	दीप्त	सभा	26.95	44 %
मंगळ	अमात्य	भ्रातृ	बाल	दीप्त	शयन	14.67	73 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	मुदित	शयन	3.75	39 %
गुरु	ज्ञाति	धन	मृत	मुदित	भोजन	3.21	27 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	कुमार	विकल	सभा	1.07	50 %
शनि	भ्रातृ	आयुष्य	कुमार	निपीदित	गमन	4.32	30 %
राहु	----	ज्ञान	वृद्ध	खल	शयन	0.00	20 %
केतु	----	मोक्ष	वृद्ध	खल	प्रकाश	0.00	20 %
एकुण						**53.99**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी
उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

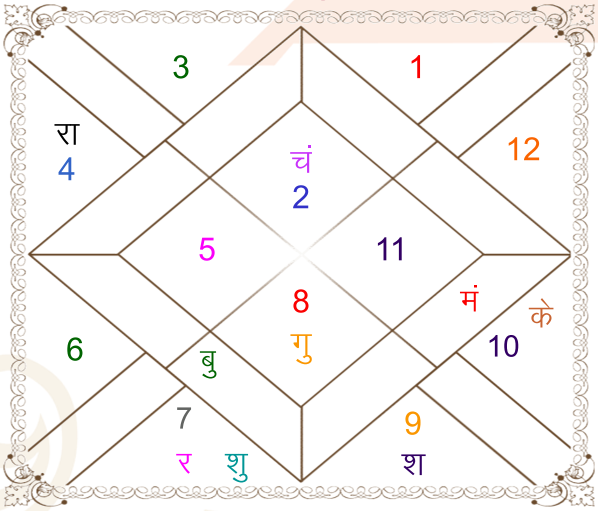

लग्न–चलित

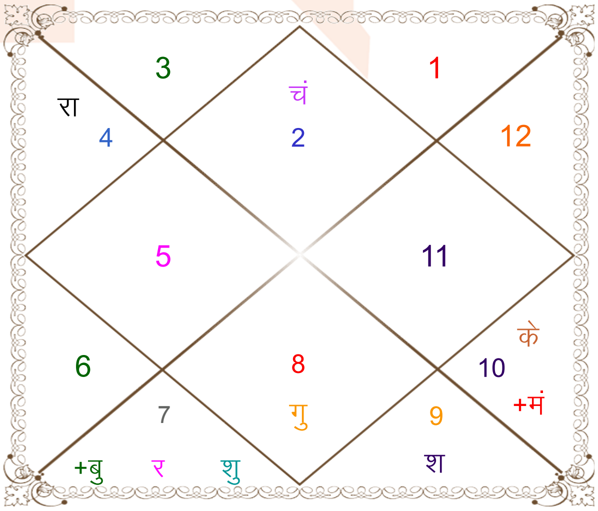

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : रवि 3 वर्ष 3 महिना 16 दिवस

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
26/10/2018		11/02/2022		11/02/2032		11/02/2039		10/02/2057	
11/02/2022		11/02/2032		11/02/2039		10/02/2057		10/02/2073	
	00/00/0000	चंद्र	12/12/2022	मंगळ	09/07/2032	राहु	24/10/2041	गुरु	01/04/2059
	00/00/0000	मंगळ	13/07/2023	राहु	28/07/2033	गुरु	19/03/2044	शनि	12/10/2061
	00/00/0000	राहु	11/01/2025	गुरु	04/07/2034	शनि	24/01/2047	बुध	18/01/2064
	26/10/2018	गुरु	13/05/2026	शनि	13/08/2035	बुध	12/08/2049	केतु	24/12/2064
गुरु	18/12/2018	शनि	12/12/2027	बुध	09/08/2036	केतु	31/08/2050	शुक्र	25/08/2067
शनि	30/11/2019	बुध	13/05/2029	केतु	05/01/2037	शुक्र	30/08/2053	सूर्य	12/06/2068
बुध	06/10/2020	केतु	12/12/2029	शुक्र	07/03/2038	सूर्य	25/07/2054	चंद्र	12/10/2069
केतु	10/02/2021	शुक्र	13/08/2031	सूर्य	13/07/2038	चंद्र	24/01/2056	मंगळ	18/09/2070
शुक्र	11/02/2022	सूर्य	11/02/2032	चंद्र	11/02/2039	मंगळ	10/02/2057	राहु	10/02/2073

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/02/2073		11/02/2092		11/02/2109		12/02/2116		12/02/2136	
11/02/2092		11/02/2109		12/02/2116		12/02/2136		00/00/0000	
शनि	14/02/2076	बुध	10/07/2094	केतु	11/07/2109	शुक्र	14/06/2119	सूर्य	01/06/2136
बुध	24/10/2078	केतु	07/07/2095	शुक्र	10/09/2110	सूर्य	13/06/2120	चंद्र	30/11/2136
केतु	03/12/2079	शुक्र	07/05/2098	सूर्य	16/01/2111	चंद्र	12/02/2122	मंगळ	07/04/2137
शुक्र	02/02/2083	सूर्य	13/03/2099	चंद्र	17/08/2111	मंगळ	14/04/2123	राहु	02/03/2138
सूर्य	15/01/2084	चंद्र	13/08/2100	मंगळ	13/01/2112	राहु	14/04/2126	गुरु	27/10/2138
चंद्र	15/08/2085	मंगळ	10/08/2101	राहु	30/01/2113	गुरु	13/12/2128		00/00/0000
मंगळ	24/09/2086	राहु	27/02/2104	गुरु	06/01/2114	शनि	12/02/2132		00/00/0000
राहु	31/07/2089	गुरु	04/06/2106	शनि	15/02/2115	बुध	13/12/2134		00/00/0000
गुरु	11/02/2092	शनि	11/02/2109	बुध	12/02/2116	केतु	12/02/2136		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 3 मा 13 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
11/01/2025		13/05/2026		12/12/2027		13/05/2029		12/12/2029	
13/05/2026		12/12/2027		13/05/2029		12/12/2029		13/08/2031	
गुरु	17/03/2025	शनि	13/08/2026	बुध	24/02/2028	केतु	25/05/2029	शुक्र	23/03/2030
शनि	02/06/2025	बुध	03/11/2026	केतु	25/03/2028	शुक्र	30/06/2029	सूर्य	23/04/2030
बुध	10/08/2025	केतु	06/12/2026	शुक्र	19/06/2028	सूर्य	10/07/2029	चंद्र	12/06/2030
केतु	07/09/2025	शुक्र	13/03/2027	सूर्य	15/07/2028	चंद्र	28/07/2029	मंगळ	18/07/2030
शुक्र	28/11/2025	सूर्य	11/04/2027	चंद्र	27/08/2028	मंगळ	10/08/2029	राहु	17/10/2030
सूर्य	22/12/2025	चंद्र	29/05/2027	मंगळ	26/09/2028	राहु	11/09/2029	गुरु	06/01/2031
चंद्र	01/02/2026	मंगळ	01/07/2027	राहु	13/12/2028	गुरु	09/10/2029	शनि	13/04/2031
मंगळ	01/03/2026	राहु	26/09/2027	गुरु	20/02/2029	शनि	12/11/2029	बुध	08/07/2031
राहु	13/05/2026	गुरु	12/12/2027	शनि	13/05/2029	बुध	12/12/2029	केतु	13/08/2031

चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि	
13/08/2031		11/02/2032		09/07/2032		28/07/2033		04/07/2034	
11/02/2032		09/07/2032		28/07/2033		04/07/2034		13/08/2035	
सूर्य	22/08/2031	मंगळ	20/02/2032	राहु	05/09/2032	गुरु	11/09/2033	शनि	06/09/2034
चंद्र	06/09/2031	राहु	13/03/2032	गुरु	26/10/2032	शनि	04/11/2033	बुध	02/11/2034
मंगळ	17/09/2031	गुरु	02/04/2032	शनि	26/12/2032	बुध	23/12/2033	केतु	26/11/2034
राहु	14/10/2031	शनि	26/04/2032	बुध	18/02/2033	केतु	11/01/2034	शुक्र	01/02/2035
गुरु	07/11/2031	बुध	17/05/2032	केतु	12/03/2033	शुक्र	09/03/2034	सूर्य	22/02/2035
शनि	06/12/2031	केतु	26/05/2032	शुक्र	15/05/2033	सूर्य	26/03/2034	चंद्र	27/03/2035
बुध	01/01/2032	शुक्र	19/06/2032	सूर्य	04/06/2033	चंद्र	24/04/2034	मंगळ	20/04/2035
केतु	12/01/2032	सूर्य	27/06/2032	चंद्र	05/07/2033	मंगळ	14/05/2034	राहु	20/06/2035
शुक्र	11/02/2032	चंद्र	09/07/2032	मंगळ	28/07/2033	राहु	04/07/2034	गुरु	13/08/2035

मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र	
13/08/2035		09/08/2036		05/01/2037		07/03/2038		13/07/2038	
09/08/2036		05/01/2037		07/03/2038		13/07/2038		11/02/2039	
बुध	03/10/2035	केतु	17/08/2036	शुक्र	17/03/2037	सूर्य	13/03/2038	चंद्र	31/07/2038
केतु	24/10/2035	शुक्र	11/09/2036	सूर्य	07/04/2037	चंद्र	24/03/2038	मंगळ	12/08/2038
शुक्र	23/12/2035	सूर्य	19/09/2036	चंद्र	13/05/2037	मंगळ	01/04/2038	राहु	13/09/2038
सूर्य	11/01/2036	चंद्र	01/10/2036	मंगळ	07/06/2037	राहु	20/04/2038	गुरु	11/10/2038
चंद्र	10/02/2036	मंगळ	10/10/2036	राहु	10/08/2037	गुरु	07/05/2038	शनि	14/11/2038
मंगळ	02/03/2036	राहु	01/11/2036	गुरु	05/10/2037	शनि	27/05/2038	बुध	14/12/2038
राहु	25/04/2036	गुरु	21/11/2036	शनि	12/12/2037	बुध	14/06/2038	केतु	27/12/2038
गुरु	12/06/2036	शनि	15/12/2036	बुध	10/02/2038	केतु	22/06/2038	शुक्र	31/01/2039
शनि	09/08/2036	बुध	05/01/2037	केतु	07/03/2038	शुक्र	13/07/2038	सूर्य	11/02/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु
11/02/2039
24/10/2041

राहु	09/07/2039
गुरु	17/11/2039
शनि	22/04/2040
बुध	08/09/2040
केतु	05/11/2040
शुक्र	18/04/2041
सूर्य	06/06/2041
चंद्र	28/08/2041
मंगळ	24/10/2041

राहु - गुरु
24/10/2041
19/03/2044

गुरु	18/02/2042
शनि	07/07/2042
बुध	08/11/2042
केतु	29/12/2042
शुक्र	24/05/2043
सूर्य	07/07/2043
चंद्र	18/09/2043
मंगळ	08/11/2043
राहु	19/03/2044

राहु - शनि
19/03/2044
24/01/2047

शनि	31/08/2044
बुध	25/01/2045
केतु	27/03/2045
शुक्र	16/09/2045
सूर्य	07/11/2045
चंद्र	02/02/2046
मंगळ	04/04/2046
राहु	07/09/2046
गुरु	24/01/2047

राहु - बुध
24/01/2047
12/08/2049

बुध	05/06/2047
केतु	29/07/2047
शुक्र	31/12/2047
सूर्य	16/02/2048
चंद्र	03/05/2048
मंगळ	27/06/2048
राहु	13/11/2048
गुरु	18/03/2049
शनि	12/08/2049

राहु - केतु
12/08/2049
31/08/2050

केतु	03/09/2049
शुक्र	06/11/2049
सूर्य	26/11/2049
चंद्र	28/12/2049
मंगळ	19/01/2050
राहु	17/03/2050
गुरु	08/05/2050
शनि	07/07/2050
बुध	31/08/2050

राहु - शुक्र
31/08/2050
30/08/2053

शुक्र	01/03/2051
सूर्य	25/04/2051
चंद्र	25/07/2051
मंगळ	27/09/2051
राहु	10/03/2052
गुरु	03/08/2052
शनि	23/01/2053
बुध	27/06/2053
केतु	30/08/2053

राहु - सूर्य
30/08/2053
25/07/2054

सूर्य	16/09/2053
चंद्र	13/10/2053
मंगळ	01/11/2053
राहु	21/12/2053
गुरु	02/02/2054
शनि	27/03/2054
बुध	12/05/2054
केतु	31/05/2054
शुक्र	25/07/2054

राहु - चंद्र
25/07/2054
24/01/2056

चंद्र	09/09/2054
मंगळ	11/10/2054
राहु	01/01/2055
गुरु	15/03/2055
शनि	10/06/2055
बुध	26/08/2055
केतु	27/09/2055
शुक्र	28/12/2055
सूर्य	24/01/2056

राहु - मंगळ
24/01/2056
10/02/2057

मंगळ	15/02/2056
राहु	13/04/2056
गुरु	03/06/2056
शनि	03/08/2056
बुध	26/09/2056
केतु	18/10/2056
शुक्र	21/12/2056
सूर्य	10/01/2057
चंद्र	10/02/2057

गुरु - गुरु
10/02/2057
01/04/2059

गुरु	25/05/2057
शनि	26/09/2057
बुध	14/01/2058
केतु	01/03/2058
शुक्र	08/07/2058
सूर्य	16/08/2058
चंद्र	20/10/2058
मंगळ	05/12/2058
राहु	01/04/2059

गुरु - शनि
01/04/2059
12/10/2061

शनि	25/08/2059
बुध	03/01/2060
केतु	26/02/2060
शुक्र	29/07/2060
सूर्य	14/09/2060
चंद्र	30/11/2060
मंगळ	23/01/2061
राहु	11/06/2061
गुरु	12/10/2061

गुरु - बुध
12/10/2061
18/01/2064

बुध	06/02/2062
केतु	27/03/2062
शुक्र	12/08/2062
सूर्य	22/09/2062
चंद्र	30/11/2062
मंगळ	17/01/2063
राहु	21/05/2063
गुरु	09/09/2063
शनि	18/01/2064

गुरु - केतु
18/01/2064
24/12/2064

केतु	07/02/2064
शुक्र	04/04/2064
सूर्य	21/04/2064
चंद्र	19/05/2064
मंगळ	08/06/2064
राहु	29/07/2064
गुरु	12/09/2064
शनि	05/11/2064
बुध	24/12/2064

गुरु - शुक्र
24/12/2064
25/08/2067

शुक्र	04/06/2065
सूर्य	23/07/2065
चंद्र	12/10/2065
मंगळ	08/12/2065
राहु	03/05/2066
गुरु	10/09/2066
शनि	11/02/2067
बुध	29/06/2067
केतु	25/08/2067

गुरु - सूर्य
25/08/2067
12/06/2068

सूर्य	08/09/2067
चंद्र	03/10/2067
मंगळ	20/10/2067
राहु	03/12/2067
गुरु	11/01/2068
शनि	26/02/2068
बुध	07/04/2068
केतु	24/04/2068
शुक्र	12/06/2068

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षित लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	8
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	70%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	69%	स्वास्थ्य, पराक्रम
गोमेद	राहु	64%	पराक्रम, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	62%	दुर्घटणा पासून सुरक्षा, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	60%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	41%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
पोवले	मंगळ	38%	नेष्ट भाग्य, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	34%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
पुष्कराज	गुरु	6%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना, हानि

रत्न की शुभता

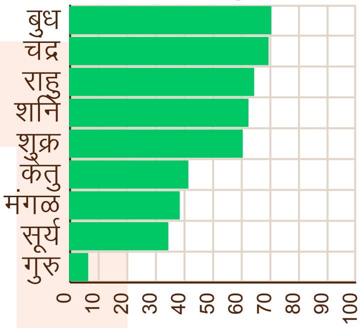

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	11/02/2022	55%	75%	50%	70%	19%	44%	50%	52%	16%
चंद्र	11/02/2032	47%	81%	38%	77%	6%	60%	62%	52%	16%
मंगळ	11/02/2039	47%	75%	56%	58%	19%	60%	62%	52%	52%
राहु	10/02/2057	9%	56%	12%	70%	6%	66%	69%	77%	16%
गुरु	10/02/2073	47%	75%	50%	58%	31%	44%	62%	64%	41%
शनि	11/02/2092	9%	56%	12%	77%	6%	66%	75%	70%	16%
बुध	11/02/2109	47%	56%	38%	83%	6%	66%	62%	64%	41%
केतु	12/02/2116	9%	56%	50%	70%	6%	66%	50%	52%	58%
शुक्र	12/02/2136	9%	56%	38%	77%	6%	72%	69%	70%	52%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षे मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्र:

अष्टमस्थान चरण	26/10/2018-24/01/2020	--------------------------	--------------------------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	--------------------------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	31/05/2032-13/07/2034	--------------------------	--------------------------
चतुर्थस्थान चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	--------------------------

द्वितीय चक्र:

अष्टमस्थान चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	--------------------------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	07/04/2057-27/05/2059	--------------------------	--------------------------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	--------------------------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थस्थान चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	--------------------------

तृतीय चक्र:

अष्टमस्थान चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	--------------------------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	--------------------------
चतुर्थस्थान चरण	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	--------------------------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
साढ़ेसातीचा पहला चरण	अशुभ	व्यय
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	धन
चतुर्थस्थान चरण	अशुभ	सुख हानि

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेहवा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेहवा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति नवम भावात आहे, हा भाग्य, आणि धर्म भाव आहे, अतः यांचा प्रभाव पासून आपण भाग्य वर काही मात्रा मधे विश्वास ठेवणारे तसेच कर्म वर जास्ती भरोसे करणारे, आपले असे सिद्धांत पासून आपण जीवनात कार्याला उन्नति प्राप्त करणारे. धर्म मधे तुमची चि काही कमी रहणार तसेच धार्मिक कार्य तीर्थ प्रवास जास्ती नाय करणारे. समाजातील विशेष सम्मान पण प्राप्त होणार. पण या मधी काही उशीर होणारी, आपण पराक्रमी माणूष होणारी या मुळे काही चिंता नाय रहणारी. नवम भाव पासून द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि चे प्रभाव पासून तुमचे खर्चे जास्ती होणार. जमीन जायदाद वर जास्ती खर्चे कराय साठी इच्छुक रहणारे या मुळे विशेष लाभ पण होउ सकतात, यांचा प्रभावा पासून जीवनात त्रास पण येउ सकतात, पण यांचे सामना, समाधान कराय साठी तुमी समर्थ होणारी. तृतीय भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून आपले पराक्रम मधे वृद्धि होणारी तसेच समाजाचे सर्व व्यधि प्रभावित होणारे ज्या मुळे इच्छित मान सम्मान प्राप्त होणार भाऊ–ताई चा काही सहयोग प्राप्त होणार. चतुर्थ भावात मंगळ दृष्टि पासून जमीन जायदाद, वाहन वगेरे प्राप्त होणारे आणि इतर सांसारिक सुख साधन पण परिश्रम पासून प्राप्त होणार, पण आई वडीळ चे स्वास्थ्य सामान्य रहणार. हया प्रकारी मंगळ प्रभावातून आपण कर्म योगी रहणारे तसेच परिश्रम आणि पराक्रम पासून आपले सांसारिक कार्य संपन्न क न भाग्योदय करणारे ज्या मुळे आपला दांपत्य जीवन सामान्य सुखी रहणार तसेच कुटुंब संतुष्ट रहणार आणि उचित पालण तसेच संबन्धातील मधुरता राहील.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरुप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हट्ते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग,ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान

करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृषभ लग्नामध्ये झाला असल्याने आपण शारीरिकष्ट्या सुंदर व आकर्षक असाल व इतरेजन आपल्या व्यक्तिमत्वाने प्रभावित होतील. तुम्चा स्वभावात धैर्य व सहिष्णूता असेल व त्याचबरोबर वाणीमध्ये मिठास असेल. कष्टाने हाती घेतलेले काम पूर्ण करणे हा आपला गुण आहे. या गुणामुळे वरिष्ठांना प्रिय, विद्वान व धनऐश्वर्याने युक्त होऊन आनंदाने आपला काळ घालवाल.

आरोग्य आपले सामान्यपणे चांगले राहील, पण आजारी पडलात तर बरे होण्याला काळ जाईल. कधी कधी आपल्या हट्टी स्वभावाचेही दर्शन घडवाल आणि इतरेजनांपेक्षा आपल्याच विचारांना योग्य समजाल. त्यामुळे इतरेजनांच्या मनामध्ये तुमची छबी प्रभावित होऊ शकते. आराम करणे आपल्याला अतिशय आवडते. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे एखादे काम हाती घेतले असेल तर ते पूर्ण होईपर्येत सोडणार नाही, अन्यथा, त्याचा विचार करण्यातच काळ घालवाल, त्यामुळे कधी कधी हानी होण्याचा संभव आहे, त्यामुळे अशी वृत्ती प्रयत्नपूर्वक सोडणे हितकारक ठरेल. शत्रूसुद्ध ा वेळोवेळी तुम्चासमोर अडचणी निर्माण करण्याचा प्रयत्न करतील, पण कोणाचीही पर्वा न करता आपण आपल्या मार्गाने जाण्याकडे तुमचा कल राहील.

कला व सौंदर्याचे तुम्ही पारखी आहात व कविता करण्याकडेसुद्धा तुमचा कल असू शकतो. त्याचबरोबर धनसंग्रह करण्याकडे तुमचा कल राहील. सांसारिक व भौतिक सुखसुविधासंबंधी आपल्या मनात तीव्र लालसा असेल व त्या प्राप्त करण्याकडे तुमचा नित्य प्रयत्न व परिश्रम कराल. एक विद्वान म्हणून आपल्या समाजात मान असेल. संधी दिसताच राजनीतिमध्ये रस निर्माण होईल, पण महत्वाचे नेतृत्वपद मिळण्याची शक्यता कमी आहे, पण सक्रिय कार्यकत्र्याच्या रूपात आपले योगदान प्रामाणिकपणे द्याल.

शांती व सहनशीलता या तुम्चा स्वाभाविक गुणांमुळे लोक प्रभावित होतील आणि तुमचे मित्र बनण्यास उत्सुक असतील. त्याचबरोबर स्वकुटुंब, मित्र व भावंडांच्या भलाईसाठी तुम्ही नेहमी यत्नशील राहाल व परिश्रमपूर्वक भौतिक सुखसुविधा प्राप्त करून आयुष्य सुख व आनंदाने व्यतित करण्याचा प्रयत्न कराल. यथोक्तम–

गुणागुणीः स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रण प्रियश्च।
धीरश्च शूरः प्रियवाकः प्रशान्तः स्यात्पुरूषो यस्य वृषे विलग्ने।।
– जातकाभरणम

अर्थ – वृषभ लग्नाचा जातक विद्वान, धनवान, गुरूजनांचा आदर करणारा, धैर्यवान, शूर, प्रियवक्ता आणि शांत ह्रदयाचा असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची मिथुन राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपली प्रवृत्ति धनसंग्रह करण्याची असेल आणि वर्तमान व भविष्यासाठी प्रचुर प्रमाणात धनार्जन करून त्याचा संग्रह केल्याने आपली आर्थिक स्थिती संतुलित राहील. त्याचबरोबर संपत्ती किंवा सुवर्णादि धातूंमध्ये गुंतवणूक करून त्यापासून भरपूर लाभ प्राप्त कराल. आपले कौटुंबिक जीवन सुख व शांतीयुक्त असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपण सदैव प्रयत्नशील राहाल आणि कौटुंबिक सहकार्य आपल्याला सदैव राहील.

सर्व स्वाद आपल्याला आवडतात, पण मिष्ठान्नाप्रति आपली अधिक रूची राहील. हा भाव वाणीचे प्रतिनिधीत्व करत असल्याने आणि त्याचा स्वामी बुध असल्याने आपल्या वाणीमध्ये मृदूता व प्रभाव राहील आणि इतरेजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर विचार अभिव्यक्ती कौशल्याने कराल पण काळानुसार आपल्या विचारांमध्ये बदलसुद्धा होत जातील. आतिथ्यशीलता आपल्या मनामध्ये सदैव राहील. याव्यतिरिक्त स्त्रीवर्गापासून आपल्याला उचित लाभ वेळोवेळी लाभेल आणि वाहन आणि बहुमूल्य रत्नांची प्राप्तीसुद्धा होईल. धार्मिक व सज्जन लोकांशी मैत्री करण्याकडे आपली प्रवृत्ती राहील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात रविची सिंह राशी उदित आहे, त्यामुळे आपल्या मातोश्री एक आदर्श व महत्वाकांक्षी स्त्री असतील आणि कुटुंबाचे पोषण उत्तम करेल आणि कुटुंबातील कुणाही व्यक्तीला तक्रार करायला जागा ठेवणार नाही. त्या एक यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता असतील आणि समाजामध्ये सर्व लोक त्यांच्यामुळे प्रभावित होतील व त्यांना यथोचित सन्मान देतील. कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धिसाठी नित्य प्रयत्न करणाऱ्या असतील आणि आपल्या इच्छांना मुरड घालून कुटुंबाला पूर्ण वाहून घेतील.

आपले घर शहरातील महत्त्वाच्या भागात असावे अशी असेल आणि आपले घरसुद्धा सुंदर व आकर्षक असेल. त्याचबरोबर घर स्वच्छ ठेवून त्यामध्ये आधुनिक साजसजावटीने घर सजवण्याकडे आपला कल राहील. घरामध्ये आधुनिक संसाधने असतील. घरातील वस्तू अव्यवस्थित झाल्या तर संताप न करता स्वतःच त्या ठीकठाक करण्याची आपली प्रवृत्ती असेल. कालानुरूप आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल आणि जीवनस्तर जसा बदलेल तसे वाहनसुद्धा बदलेल. प्रशासकीय सेवेमध्ये आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल. पैतृक संपत्तीसुद्धा आपल्याला मिळे आणि शिक्षणसुद्धा चांगले होईल. आपल्या स्वभावात तेजी असेल आणि कन्या संतती अधिक असेल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावात बुधाची कन्या राशी उदित होती. त्याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि वैदिक साहित्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. आपण संसारात महत्वाच्या अशी शुभ कार्ये विनाविलंब पूर्ण करण्याचा प्रयत्न कराल. बुधाच्या राशीचा प्रभावामुळे आपण विज्ञान, गणित, लेखन किंवा अध्ययनामध्ये विशेष रूची दाखवाल त्याचबरोबर पाककौशल्यामध्ये सुद्धा रूची राहील. सुखी दाम्पत्य जीवनासाठी आपल्या जीवनसाथीची निवड करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची चुणूक दाखवाल. त्याचबरोबर वार्तालाप करण्यामध्ये आपण चतुर असाल आणि इतरेजनांना आपल्या गप्पांनी प्रसन्न कराल.

आपल्याला संतती सीमित असेल आणि त्यांच्या शिक्षण व आरोग्याविषयी आपण सजग असाल आणि आवश्यक असेल तेव्हा पैसाही खर्च कराल. संतती तुमच्या वृद्धावस्थेमध्ये आपली पूर्ण काळजी घेईल त्यांच्याकडून आपल्याला काही कष्ट होणार नाहीत. आज आपल्याला जे काही मिळत आहे ते पूर्वपुण्याईने मिळते यावर आपली पूर्ण श्रद्धा असेल. त्यामुळे प्रसन्न व संतुष्ट वृत्ती असेल. आपल्याला कन्या संतती अधिक व पुत्र संतती कमी असेल आणि तेसुद्धा आयुष्यामध्ये सुख व वैभवपूर्ण जीवन जगतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती, त्याच्या प्रभावामुळे आपले दाम्पत्य जीवन मधुर व शांतीपूर्ण राहील तसेच आयुष्य सुख व उन्नतीदायक जाईल. या राशीच्या प्रभावामुळे आपल्याला जीवनसाथी प्रेमळ व शांत स्वभावाच्या मिळेल.

तुमच्या जीवनसाथीला तुमच्या प्रेमसंबंधांविषयी शंका असेल, पण अशा गोष्टी आपण गुप्त ठेवणार नाही आणि तसे काही झाले तर तुम्ही तुमच्या पत्नीला स्पष्टपणे सांगाल. तुमचा कल सुखद व शांत कौटुंबिक जीवन व्यतित करण्याकडे असेल. तुम्ही घराकडे कधीही दुर्लक्ष करणार नाही आणि पत्नीच्या गरजांकडेही पूर्ण लक्ष द्याल, ज्यामुळे आपापसात प्रेम व सद्भाव कायम राहील. तुम्हाला आपली पत्नी चांगले कपडे नेसावी आणि प्रसन्न मुद्रेमध्ये असावे असे वाटत असते. कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक व मीन राशी किंवा लग्नाच्या जातकाबरोबर विवाह केल्यास आपले जीवन सुखकर जाईल. भौतिक साधने, वित्तसंबंधी कार्य, कृषि, संगीत, महिलांची वस्त्रप्रावरणे याकडे आपला जास्त रस आहे, आणि अशा व्यवसायामधून आपल्याला उचित लाभ होऊ शकतो. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्र मंत्र आदि व्यवसायसुद्धा आपण स्वीकारू शकता.

आपली पत्नी निरोगी, सुडौल शरीराची असेल आणि अनेकानेक कला तिला येत असतील आणि सौभाग्यपूर्ण आपले जीवन व्यतित करेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एखाद्या विख्यात कंपनी किंवा उद्योगामध्ये कार्यरत राहाल. खाणी, कंत्राटदारी किंवा खनिज आयातीमध्ये आपल्याला रूची राहील. याव्यतिरिक्त घरबांधणी, मेकॅनिकल इंजिनिअरिंग, तंत्र व स्टीलसंबंधी व्यापार किंवा कार्यक्षेत्राशी आपला संबंध असेल. त्याचबरोबर आपल्याला गुप्तचर विभागाशी संबंधित काम मिळू शकते. तुम्हाला आधुनिक भौतिक साधनांच्या व्यापारामध्ये रूची राहील आणि त्यातून भरपूर लाभही होईल. गुंतवणुकीतूनही आपल्याला लाभ होऊ शकतो किंवा वित्त उद्योगाशी आपला संबंध राहील. स्वकष्टाने पैसा कमवाल आणि जुगार किंवा सट्टा इत्यादिंमध्ये आपल्याला रस राहील आणि कधी कधी आपल्याला लाभसुद्धा होऊ शकतो, विशेषतः बुधाच्या दशेमध्ये याची प्रचिती येईल.

आपले वडील एक बुद्धिमान व्यक्ती असतील आणि त्यांची स्मरणशक्ती उत्तम असेल. त्यांचा अचूक तर्कांनी लोक प्रभावीत असतील आणि त्यांना सन्मान देतील, त्याचबरोबर ते स्पष्टवक्ते आणि निःस्वार्थी प्रवृत्तीचे असतील. नैतिक कार्य कोणतेही असले तरी ते करण्यास तत्पर असतील.

राजकारणाचा आधार शनि ग्रह असल्याने त्याच्या दशा–अंतर्दशेमध्ये आपण राजकारणामध्ये प्रवेश करू शकता त्याचबरोबर या काळात राजकारण किंवा सरकारकडून अपेक्षित मदत व लाभही प्राप्त होईल. याचबरोबर तुम्ही कार्यमग्न, चतुर, धर्मावर श्रद्धा ठेवणारे असाल पण त्याचबरोबर शत्रूही अधिक असतील.

फलादेश - 2026

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने शनी यंदा अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष महत्वाचे ठरेळ. ह्या काळात तुम्ही व्यापारात वा कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ होईळ. समाजात कीर्ति वाढेळ व ळोक उचित आदर प्रदान करतीळ. राजकारणात किंवा नोकरीत पदप्राप्ती संभवते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा स्वतःच्या व संतातीच्या प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभफळ देईळ. शुभ फळांमध्ये न्यूनता जाणवेळ व लक्ष्यप्राप्ती करता संघर्ष करावा ळागेळ. परंतु सामान्यपेण हा काळ चांगळा असेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 13/05/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु सप्तं भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहे। पण शनि अष्टं भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः आपण सगड़े कार्य क्षेत्रातीळ सफळ होणारे. व्यापार मधे पूर्ण लाभ होउ सकतो नौकरी मधे पदोन्नती होणारी मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. वेराजगारांना रोजगार प्राप्त होणार कुटुम्ब मधे सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार कुटुम्ब मधे कोणी शुभ आणि मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार समाजतीळ चांगला सम्पर्क स्थापित होणार आणि प्रतिष्ठा भेंटणारी. अतः असे समया चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः आपण शुभ अवसर प्राप्त

करणारे जूने कार्य पूर्ण होणारे आणि महत्वा कांक्षा उत्पन्न होणारी. विशेष माणूस बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार अतः भविष्य साठी लाभ होणार आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती रहणार आणि कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातीळ सम्मान, यश, प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार. काही तरी फायदे साठी प्रवास सम्पन्न होणारी. आणि सम्मान प्राप्त होणार शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः समय सदुपयोग करावे. शारीरिक स्वास्थ्य चांगला रहणार पण जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने गुरु यंदा चतुर्थ भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात शारीरिकदृष्टया तुम्ही सुखी असाळ. कौटुम्बिक सुखात वाढ होईळ. व सर्व ळोक मिळून मिसळून वागतीळ. ह्या वर्षी तुमच्या योजना पूर्ण होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीकरता हे वर्ष शुभ व अनुकूळ असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. जवळचे ळोक प्रशंसा करतीळ व प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या वर्षी माळमत्ता व घराच्या दृष्टीने सुख व ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर आई व सासवरच्या ळोकांकडून सहकार्य व ळाभ होऊ शकतो. गोचरफळ ह्या काळात अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून उपर्युक्त फळांमध्ये कमतरता राहीळ. पण परिश्रमाने त्यात तुम्ही सफळता मिळवू शकता.

यंदा शनी बाराव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने प्रवास संभवतात. परदेशगमनाचाही योग आहे. तुम्ही योजनांची आरवणी कराळ व त्या पूर्ण करण्यासाठी प्रयत्न कराळ. शारीरिक किंवा मानसिक दृष्टया त्रास संभवतो. इतरांशी वादविवाद होण्याची शक्यता आहे. बांधव, मित्र किंवा इतरांकडून सहाकार्य मिळणार नाही. स्वतःच सर्व कार्ये करावी ळागतीळ. यंदा अन्य गोचर अशुभ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे अशुभ फळे मिळतीळ. ज्यामुळे मानसिक त्रास संभवतो. म्हणून शुभ व अनुकूळ फळे मिळण्याकरता नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 12/12/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि अष्टं भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहे। पण बुध षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः इच्छित प्रयोजने सफळ नाय होणारी आणि सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल नाय रहणार तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो आणि पदोन्नति साठी अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती प्रभावित होणारी तसेच सहयोग पण नाय भेंटणार, पण सामाजिक सम्मान यश भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साठी खर्चे क नका आणि कोणी वर विश्वास नका करावे, बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो जमीन, सम्बन्धी काही तरी मतभेद किंवा त्रास उत्पन्न होऊ सकतो.

ह्या वेली मिळे–जुळे सफळता प्राप्त होणारी आणि कार्य सिद्धी साठी खूप परिश्रम होणार. कोणी प्रयोजने सम्पन्न होउ सकतो पण अडचणे उत्पन्न होणारी आर्थिक स्थिति सामान्य

रहणारी कार्य क्षेत्रातीळ उन्नती होणारी मित्र आणि सम्बंधी पासून सहयोग प्राप्त होणार. कुटुम्ब मधे सुख समृद्धी नाय रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार. स्वास्थ्य साठी सावध रहाय ला पाहिजे.

फलादेश - 2028

ह्या वर्षी गुरु गोचरीने चतुर्थ भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष सामान्यताः चांगळे असेळ. प्रकृतीच्या दृष्टीने काळ चांगळा आहे. मानसिकदृष्टया समाधानी असाळ. कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. यंदा तुमच्या मनातीळ योजना व कार्ये सफळ होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. परिश्रमाने ळाभ व धनप्राप्ती होईळ. फळतः आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. ह्या काळात मित्र व बांधवांकडून सहकार्य मिळेळ. माळमत्ता व वाहनविषयक पण ह्या काळात मिळू शकते. ह्या वर्षी आई व सासरच्या ळोकांकडून ळाभ संभवतो. पण मिळकतीच्या दृष्टीने गोचरफळ व दशाफळ प्रतिकूळ असल्याने चांगळी फळे कमी मिळतीळ, व तुम्हाळा संघर्ष आणि परिश्रम जास्त करावे.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्नता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू अष्टमात व केतू द्वितीयात असेळ. त्यामुळे प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिकदृष्टया पण त्रास संभवतो. कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्वी विशेष नसेळ. परस्पर मतभेदांमुळे परस्पर स्नेह व सहकार्य कमीच असेळ. व्यापारात व कार्यक्षेत्रात उन्नती करता अतिशय कष्ट व संघर्ष करावा ळागेळ. त्यानंतरच थोडयाफार प्रमाणात सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ पण आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. पण व्ययाधिक्यामुळे त्रास होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात तुम्हाळा अचानक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर जुगार, सट्टा, लॉटरी आदिमधून ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशा विशेष शुभ फळे देणार नाही. त्यामुळे महत्वाची कार्ये परिभमानंतरच संपन्न होतीळ. धनप्राप्तीतही अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांच्या प्राप्तीकरता राहू–केतूचा नियमित जप व दान करावे.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं बुध चा अंतर रहणार। बुध षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण चन्द्र प्रथम भाव मधीं वृषभ राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूळ नाय आहे, अतः परिश्रम केल्या नंतर पण विशेष सफळता नाय भेंटणारी. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो. असे समय वर कोणी विशेष खर्चे नाय कराय ला पाहिजे. पण नोकरी मधे शुभ फळ प्राप्त होणार बेरोजगारांने रोजगार प्राप्त होणार कुटुम्ब सुख शान्ती अनुकूल रहणारी कोणी अजारी होउ सकतो. शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होणार हुसारी पासून विजय प्राप्त होऊ सकतो. अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2029

यंदा गोचरीने गुरु पंचम भावात असेळ व त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी सामान्यतः चांगळे असेळ. ज्योतिष, संगीत व साहित्याविषयी आवड निर्माण होईळ. व यत्नपूर्वक त्याचे ज्ञान मिळवाळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व धनप्राप्तीचे योग संभवतात. महत्वाच्या राजकारणी ळोकांशी ओळखी होतीळ व त्यातून ळाभ संभवतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर असाळ. मुळांकडून सहकार्य मिळेळ. तुमची कार्यक्षमता वाढेळ. पण अन्य गोचरफळ व दशाफळ यंदा अशुभ असल्याने उपरोक्त चांगल्या फळात कधी–कधी कमतरता संभवते.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्न्ता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू अष्टमात व केतू द्वितीयात असेळ. त्यामुळे प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिकदृष्टया पण त्रास संभवतो. कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी विशेष नसेळ. परस्पर मतभेदांमुळे परस्पर स्नेह व सहकार्य कमीच असेळ. व्यापारात व कार्यक्षेत्रात उन्नती करता अतिशय कष्ट व संघर्ष करावा ळागेळ. त्यानंतरच थोडयाफार प्रमाणात सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ पण आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. पण व्ययाधिक्यामुळे त्रास होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात तुम्हाळा अचानक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर जुगार, सट्टा, लॉटरी आदिमधून ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशा विशेष शुभ फळे देणार नाही. त्यामुळे महत्वाची कार्ये परिभमानंतरच संपन्न होतीळ. धनप्राप्तीतही अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांच्या प्राप्तीकरता राहू–केतूचा नियमित जप व दान करावे.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष बुध चा अंतर 13/05/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 12/12/2029 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर शुक्र ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी प्रथम भाव मधीं वृषभ राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी अशुभ आणि प्रतिकूळ आहे. अतः विशेष कार्य मधे अडचणे येणारी तसेच लाभ मार्ग अव द्ध रहणार कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो नोकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो अधिकारयां पासून मतभेद रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी आणि सहयोग नाय भेंटणार. असे समय वर जोखम कार्य पासून सावध रहायला पाहिजे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः इच्छि प्रयोजने सफळ

नाय होणारी आणि सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल नाय रहणार तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो आणि पदोन्नति साठी अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती प्रभावित होणारी तसेच सहयोग पण नाय भेंटणार, पण सामाजिक सम्मान यश भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साठी खर्चे क नळा आणि कोणी वर विश्वास नळा करावे, बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो जमीन, सम्बन्धी काही तरी मतभेद किंवा त्रास उत्पन्न होऊ सकतो.

हा समय तुमचां साठी मध्यम रहणार अतः ह्या वेळी मिळे–जुळे फळ प्राप्त होणार. सफळता साठी खूप परिश्रम होणार तसेच कार्य क्षेत्र मधे अडचणे उत्पन्न होणारी, व्यापार मधे घाटे होऊ सकतो. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे त्रास उत्पन्न होऊ सकतो. जर आपण नोकरी मधे असणारे तर गुस्से पासून काही तरी अशुभ घटणे पण घटणारी मित्र आणि संबन्धी बरोबर मतभेद रहणार अतः असे समय वर कोणी वर विश्वास नका करावे आणि धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने गुरु सहाव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या स्वभावात राग, चिडचिडेपणा आढळेळ व शारीकि स्वास्थ्यावर परिणाम होईळ. मानसिकदृष्टया पण अस्वस्थ रहाळ. त्यामुळे सांसारिक कार्यात उत्साहाचा अभाव असेळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाच्या जोरावर सफळता मिळेळ. ह्या काळात व्यापारात अडथळे येतीळ. नोकरीत पण विरोधक प्रबळ असल्याने पदोन्नतीमध्ये विळम्ब संभवतो. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ. आवश्यक प्रमाणात ळाभ होईळ. पण खर्चाच्या अधिकतेमुळे आर्थिक कमतरता जाणवेळ. पण पैसा मिळण्याकरता तुम्ही सतत प्रयत्नशीळ असाळ.त्याचबरोबर ह्या काळात अन्य गोचर व दशा विशेष अनुकूळ नसल्याने जास्त कष्ट करावे ळागतीळ. तेव्हाच थोडफार सुख मिळेळ. म्हणून तुम्ही गुरुचा उपवास, पूजा तथा दान नियमितपणे करावे.

गोचरीने यंदा शनी प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. वेळप्रसंगी वातजनित रोग संभवतात. त्याचबरोबर मानसिक अशान्ती राहीळ. कौटुम्बिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. परस्पर तणाव अनुभवाळ. पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नतीच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षाचे असेळ. अत्यधिक कष्टानंतर ळाभ मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होईळ. आर्थिकदृष्टया त्रास संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अनुकूळ नाही. त्यामुळे कष्टानेच सफळता मिळेळ. ज्यामुळे मानसिक तणाव येईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीच्या दुष्प्रभावाने त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान नियमितपणे करावे. त्याचबरोबर शनिवारी मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्याने सुख–शान्ती व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्याचया प्रभावाने हे वर्ष चांगळे जाणार नाही. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. त्याचबरोबर पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ, परस्पर मतभेदांमुळे तणाव निर्माण होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिभमाने संपन्न होतीळ. त्यानंतरच थोडाफार ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. अधिक खर्चामुळे त्रास संभवतो. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात ह्या काळात भागिदाऱ्यांकडून किंवा सहाकाऱ्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क रहावे. ह्या काळात सर्व कार्यो बुद्धीपूर्वक संपन्न करावी.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ नाही. त्यामुळे त्रास संभवतो. धनप्राप्ती मध्ये अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमिपणे राहूकेतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण चन्द्र प्रथम भाव मधीं वृषभ राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः कार्य क्षेत्र मधे सगड़े अडचणे उत्पन्न होणारी असे समय वर जोखम कार्य साठी सावध रहाय ला पाहिजे. नोकरी मधे स्थिति सामान्य रहणारी पण अतिरिक्त कार्य होण्या मुळे काही त्रास होउ सकतो कुटुम्ब सुख होऊ सकतो शत्रु तुमची प्रतिष्ठा प्रभावित करणारे स्वास्थ्य साठी सावध रहाय ला पहिजे आणि

जेवण वर नियंत्रण ठेवाय ला पाहिजे.